आईआईटी में मिलकर शोध की इबारत लिखेंगे भारत-अमेरिका

कानपुर, शिक्षा संवाददाता: कभी लोकप्रिय रहा इंडो अमेरिका प्रोग्राम अब आईआईटी परिसर में सफलता की इबारत लिखेगा। इसके तहत परिसर में उच्चस्तरीय अंतर्राष्ट्रीय शोध केंद्र बनेगा। इसमें अमेरिका से विषय विशेषज्ञ आकर समय-समय पर व्याख्यान देंगे।

जब अमेरिका की मदद से आईआईटी की स्थापना हुई थी, तब कानपुर इंडो अमेरिका प्रोग्राम का कार्यालय स्वरूप नगर में था। केंद्र से अमेरिका के कई विश्वविद्यालय जुड़े थे। वहां से हर साल कई विषय विशेषज्ञ आते थे और आईआईटी छात्रों व शिक्षकों के बीच रह कर अध्ययन व अध्यापन करते थे। शैक्षिक ढांचा, पाठ्यक्रम, प्रयोगशालाएं बनाने में मदद भी करते थे। यहां के छात्र व शिक्षक अमेरिका के विश्वविद्यालयों में जाकर प्रशिक्षण लेते थे। इस कार्यालय को 1973 में बंद कर संस्थान में लाया गया, लेकिन संस्थान में आने के बाद यह कार्यालय लगभग निष्क्रिय हो गया।

इंडो-अमेरिकन प्रोग्राम को मिलेगी नयी शक्ल

सात सितंबर को आयेंगे अमेरिकी राजदूत

शोध व विकास में आपसी सहयोग पर चर्चा

अब आईआईटी के स्वर्ण जयंती वर्ष (जुलाई -09 से जून 2010 तक) पर इंडो अमेरिका फाउंडेशन बनाने की तैयारी है जिसके अंतर्गत विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र कई नये प्रयोग होंगे। आईआईटी के निदेशक प्रो. एसजी धांडे ने बताया कि इसके तहत एक बहुआयामी अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान एवं शोध केंद्र बनाया जाना है। केंद्र पर उच्चस्तरीय अवस्थापना सुविधाओं के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वे उपकरण व मशीनें होंगी जो सामान्य रूप से बड़े बड़े संस्थानों में उपलब्ध नहीं हैं। जरूरत पड़ने पर दूसरे संस्थानों के छात्र भी उनका उपयोग कर सकेंगे। पूर्व छात्र भी कार्यक्रम में विशेष रुचि ले रहे हैं। दोनों देशों की संबंधित संस्थानों के वैज्ञानिक, शिक्षक व छात्र शोध में एक दूसरे की मदद करेंगे तथा परस्पर अवस्थापना सुविधाओं का उपयोग कर सकेंगे।

7 सितंबर को अमेरिका के राजदूत डॉ. डेविड सी. मुलफाड संस्थान आ रहे हैं। उनके साथ परियोजना को अंतिम रूप दिया जायेगा। उनकी छात्रों, संकाय सदस्यों व अधिकारियों, नगर के प्रशासनिक अधिकारियों तथा यहां के औद्योगिक समूहों के प्रमुख लोगों व पूर्व छात्रों के साथ बैठक होगी। भारत में अमेरिकी दूतावास के सदस्य भी रहेंगे। बैठक में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत व अमेरिका के पारस्परिक सहयोग पर चर्चा होगी। नगर विकास के लिये भी चिंतन किया जायेगा। आईआईटी निदेशक कहते हैं कि यहीं से 'मिशन ओरिएंटेशन रिसर्च' शुरू होगा।

गौरतलब है कि आईआईटी के बड़ी संख्या में पूर्व छात्र अमेरिका के कई राज्यों में कार्यरत हैं। या तो वे बड़े महत्वपूर्ण पदों पर काम रहे हैं अथवा निजी कंपनियां चला रहे हैं। अभी तक इन पूर्व छात्रों ने संस्थान को करोड़ों की आर्थिक मदद करके नये भवन और प्रयोगशालाएं मुहैया करायीं हैं। आधा दर्जन से अधिक पूर्व छात्रों ने विशिष्ट सम्मानित चेयर शुरू की हैं जिनमें जमा की गयी धनराशि में शोध करने वाले विशिष्ट शिक्षकों को आर्थिक सहायता दी जा रही है। ये पूर्व छात्र संस्थान के नये छात्रों को अपनी कंपनियों में बुलाकर विशेष रूप से मदद भी कर रहे हैं। इंडो-अमेरिका प्रोग्राम में अमेरिका में बसे पूर्व छात्रों की विशेष भूमिका रहेगी।

जर्मनी के नौ विश्वविद्यालय आईआईटी संग जुड़ेंगे

कानपुर, शिक्षा संवाददाता: इंजीनियरिंग व प्रौद्योगिकी में शोध व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिये मानक साबित हो चुके भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) पर अब दुनिया भर की निगाहें हैं। जल्दी ही जर्मनी के सर्वोत्कृष्ट नौ विश्वविद्यालयों में आईआईटी की मेधा का डंका बजेगा। इन तकनीकी विश्वविद्यालयों ने शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि व शोध के लिये आईआईटी से हाथ मिलाया है।

आईआईटी की मेधा की हनक का ही परिणाम है कि विश्व के कई बड़े देशों की उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थाएं आईआईटी के साथ मिल कर शोध व शिक्षण में शिक्षकों तथा छात्रों में सहयोग, प्लेसमेंट, औद्योगिक विकास, आर्थिक सुदृढ़ता, अवस्थापना सुविधा निर्माण सहित कई और क्षेत्रों में कार्य करने के समझौते कर रहे हैं। जर्मनी के नौ तकनीकी विश्वविद्यालयों के शैक्षिक दल ने यहां आकार विभागों को देखा तथा पाठ्यक्रम खंगाला। उच्चस्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता, अनुसंधान की असीम संभावनाएं देख उन्होंने आईआईटी के एक विशेष विभाग से

दुनिया भर की निगाहें - 1

समझौता करने का प्रस्ताव रखा। अब संस्थान को देखना है कि कौन से विश्वविद्यालय में कौन सा विभाग विशेषज्ञता रखता है जिससे यहां के विभाग को जोड़ा जाये? इसके लिये निदेशक प्रो. संजय गोविंद धांडे अक्टूबर में जर्मनी जाएंगे। वैसे जर्मनी के उक्त तकनीकी विश्वविद्यालयों ने रेलवे इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी, नैनो टेक्नालॉजी एंड इंजीनियरिंग,मिटीरियल टेक्नालॉजी एंड इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग, उर्जा उत्पादन एवं वितरण, बायोलाजिकल साइंस एंड बायो इंजीनियरिंग, इंफार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नालॉजी, इनवायरमेंटल इंजीनियरिंग में विशेष रुचि दिखाई है।

दोनों देशों के बीच 'फ्रंटियर्स ऑफ इंजीनियरिंग' कार्यक्रम का समझौता हुआ है। इसमें रेडियो फ्रीक्वेंसी आईडेंटीफिकेशन (आईएफआईडी) टेक्नालॉजी, वीएलएलआई टेक्नालॉजी, मॉडलिंग एंड सिमुलेशन आफ प्रॉसेस टेक्नालॉजी इन एमईएमएस, उच्च स्तरीय विंड टनेल टेस्टिंग को मुख्य रूप से शामिल किया गया है। दूरस्थ शिक्षा में दोनों देशों के परास्नातक शोध छात्रों के लिये तीन से अधिक एडवांस स्तर पाठ्यक्रम वीडियोकांफ्रेंसिंग के माध्यम से चलाये जायेंगे। एक इंडो जर्मन ज्वाइंट रिसर्च काउंसिल प्रस्तावित है जो संयुक्त रूप से शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देगी।

विकसित देशों ने दी तवज्जो

कोरिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भूटान, ईरान, इजराइल, दक्षिण अफ्रीका, नाइजीरिया व तंजानिया जैसे विकासशील देशों के बाद इधर कुछ वर्षों से रूस, चीन, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, इटली जैसे विकसित देशों ने शोध, शिक्षण, इंटर्नशिप के प्रति आईआईटी को विशेष तवज्जो दी है। इन देशों की कई परियोजनाओं पर यहां काम हो रहा है।